तीसरा राजवंश और केस्साइट लोगों का शासन

(1760 ई. पू. से 1185 ई. पू.)

केस्साइट लोगों ने सम्पूर्ण बेबीलोनिया पर अधिकार कर लिया। ये लोग आर्यजाति के थे। उन्होंने बेबीलोनिया की संस्कृति को अपना लिया। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि केस्साइट लोगों ने बेबीलोनिया पर विजय प्राप्त की, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से बेबीलोनिया के लोगों ने उन लोगों पर विजय प्राप्त की थी। केस्साइट लोगों ने बेबीलोनिया के रीति-रिवाजों, धर्म एवं लिपि को अपना लिया था।

बेबीलोनिया पर केस्साइट लोगों का अधिकार और उनका शासन प्राचीन बेबीलोनिया के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। केस्साइट लोगों ने वर्षों की गणना के राज्यकाल से आरम्भ की। उनका प्रधान देवता 'सूर्यांश' था, जो आर्य लोगों के देवता सूर्य से मिलता-जुलता था। इन लोगों ने 600 वर्ष तक बेबीलोनिया पर शासन किया।

गंदाश केस्साइट लोगों के राजवंश का संस्थापक था। उसके बाद उसका लड़का अगुम गद्दी पर बैठा, जिसने 22 वर्ष तक शासन किया। सत्रहवीं शताब्दी ई. पू. से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी ई. पू. के बीच केस्साइट वंश के तेरह राजाओं ने शासन किया। इन राजाओं के मिस्र तथा पश्चिमी एशिया के देशों के शासकों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। बेबीलोन के राजा मिस्र के फराओ से मित्रता करने के लिए अपनी लड़की की शादी उसके साथ करते थे, परन्तु मिस्र का राजा अपनी लड़की की शादी असीरिया, बेबीलोन के राजाओं के साथ करना अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझता था।

केस्साइट लोगों ने बेबीलोनिया की भाषा, लिपि, कानून और न्याय-प्रणाली का पश्चिमी एशिया में प्रचार किया। एलम के लोगों के आक्रमण के कारण केस्साइट वंश के राजाओं का पतन हुआ। केस्साइट लोगों के सम्पर्क से बेबीलोन की संस्कृति समृद्धि हुई। उनके समय में व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में प्रगति हुई। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इन्होंने बेबीलोनिया का सम्बन्ध हिट्टाइट, एलम, मिस्र और मित्तानी के राजाओं से किया। इस प्रकार केस्साइट लोगों के सम्पर्क के कारण बेबीलोन के सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

केस्साइट शासन के बाद का इतिहास

केस्साइट लोगों के पतन के बाद नेबुचडरेज्जर गद्दी पर बैठा। यह चतुर्थ राजवंश का तीसरा शासक था। उसने अपने देश की प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित किया और एलम के आक्रमण के खतरे को बहुत कम कर दिया। उसने बेबीलोन को एक शक्तिशाली राज्य बना दिया।

नेबुचडरेज्जर ने असीरिया के राजा को मार भगाया। उसने 1010 ई. पू. में असीरिया के राजा तिगलथ पिलेसर प्रथम के साथ दो लड़ाइयाँ लड़ीं। पहली लड़ाई में बेबीलोनिया को विजय प्राप्त हुई। दूसरी लड़ाई में असीरिया का राजा विजयी हुआ और उसने बेबीलोन नगर और अन्य प्रमुख शहरों पर अधिकार कर लिया। तिगलथ पिलेसर की मृत्यु के बाद बेबीलोनिया पुनः स्वतंत्र हो गया।

असीरिया और बेबीलोनिया के बीच करीब तीन शताब्दियों तक रुक-रुककर संघर्ष चलता रहा। इस समय सेमेटिक जाति के लोग भी निरन्तर बेबीलोनिया पर आक्रमण करते रहे। इन लगातार आक्रमणों से बेबीलोनिया में अराजकता, अशान्ति एवं अव्यवस्था फैल गई थी। बेबीलोनिया में छठें राजवंश के शासकों ने 1031 ई. पू. से 1012 ई. पू. तक शासन किया। इसके बाद एलम के एक शासक ने बेबीलोनिया पर अधिकार कर सातवें राजवंश की स्थापना की। यह सातवाँ राजवंश 1006 ई. पू. तक कायम रहा।

इसके बाद आठवें राजवंश का शासन स्थापित हुआ। इस वंश के शासकों ने 1005 ई. पू. से 762 ई. पू. तक शासन किया। कुछ समय बाद असीरिया ने बेबीलोनिया पर अधिकार कर लिया। इसके बाद असीरिया के शासक अशुर बनीपाल ने साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया, लेकिन कुछ ही समय बाद बेबीलोनिया फिर स्वतंत्र हो गया।

शालमनेसर के पुत्र और उत्तराधिकारी शंशी अदाद चतुर्थ ने बेबीलोनिया पर पुनः अधिकार कर लिया। आठवें राजवंश का कब अन्त हुआ और नौवाँ राजवंश कब स्थापित हुआ, इस सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती।

745 ई. पू. में तिलगथ पिलेसर तृतीय असीरिया की गद्दी पर बैठा। उसने साम्राज्यवाद की नीति अपनाई। वह प्राचीन विश्व इतिहास में प्रसिद्ध है। तिगलथ पिलेसर तृतीय ने बेबीलोनिया के राजा नेबोनास्सर को पराजित किया और संधि के लिए विवश किया। इस समय बेबीलोनिया में नौवें राजवंश का अन्त हो गया और दसवाँ राजवंश स्थापित हुआ।

दसवें राजवंश में विभिन्न वंशों के उन्नीस राजाओं ने 732 ई. पू. से 625 ई. पू. तक शासन किया। इस काल में बेबीलोनिया पतन की ओर अग्रसर होता जा रहा था।

तिगलथ पिलेसर चतुर्थ ने अपने उपनाम पुलु के नाम से बेबीलोनिया पर शासन किया। इसके बाद उसके पुत्र शल्मानेसर पंचम ने उलु-लाई के नाम से 727 ई. पू. से 722 ई. पू. तक बेबीलोनिया पर शासन किया।

सारगन द्वितीय

सारगन द्वितीय 722 ई. पू. में असीरिया की गद्दी पर बैठा। उसके समय में मेरोडाक बालादान नामक चाल्डिया के एक राजकुमार के नेतृत्व में बेबीलोनिया में विद्रोह हुआ। मेरोडाक ने एलम के शासक की सेना की सहायता से सारगन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया। परिणामस्वरूप मेरोडाक बेबीलोनिया की गद्दी पर बैठा और सारगन द्वितीय को असीरिया जाने के लिए विवश होना पड़ा।

सारगन द्वितीय ने कुछ समय बाद मेरोडाक पर आक्रमण किया। इस बार मेरोडाक को एलम के राजा ने सहायता नहीं दी। फलतः मेरोडाक पराजित होकर चाल्डिया भाग गया और सारगन द्वितीय 706 ई. पू. में पुनः बेबीलोनिया का राजा बना। इसके बाद अपने शासन के अन्तिम दिनों तक उसने बेबीलोनिया के शासक के रूप में राज्य किया।

सेन्नाचेरिब (705 ई. पू. से 681 ई. पू.)

सारगन द्वितीय के बाद 705 ई. पू. में सेन्नाचेरिब असीरिया की गद्दी पर बैठा। इस समय मेरोडाक ने एलम के राजा की सहायता से बेबीलोनिया में विद्रोह कर दिया। सेन्नाचेरिब

ने मेरोडाक को पराजित करके अपने एक प्रतिनिधि बेल इबनी को बेबीलोनिया की गद्दी पर बैठा दिया। दो वर्ष बाद जब सेन्नाचेरिब अपने साम्राज्य के पश्चिमी हिस्सों में विद्रोह दबाने के लिए गया, तो मेरोडाक ने बेबीलोनिया पर फिर आक्रमण कर दिया। बेल इबनी मेरोडाक की गुप्त सहायता कर रहा था। सेन्नाचेरिब ने इस विश्वासघात के कारण उसे बेबीलोनिया की गद्दी पर बैठा दिया।

बेबीलोनिया के लोग असीरिया की अधीनता से मुक्त होना चाहते थे। अतः उन्होंने एलम की सहायता से पुनः विद्रोह किया। सेन्नाचेरिब ने 686 ई. पू. में बेबीलोनिया और एलम की संयुक्त सेना को युद्ध में पराजित किया। इस युद्ध में एलम का राजा मारा गया। बेबीलोन पर असीरिया का शासन पुनः स्थापित हुआ। बेबीलोनिया के लगातार विद्रोहों से क्रुद्ध होकर सेन्नाचेरिब ने बेबीलोन शहर की सुरक्षात्मक चहारदीवारी को नष्ट कर दिया। मन्दिरों, महलों और घरों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। बेबीलोनिया के प्रमुख देवता मारदुक की प्रतिमा को असीरिया ले जाया गया। बेबीलोनिया के निवासियों को निकाल दिया गया और उसे खण्डहरों में परिवर्तित कर दिया गया।

सेन्नाचेरिब के बाद उसका छोटा पुत्र एसरहाद्देन 681 ई. पू. से गद्दी पर बैठा। उसने 681 ई. पू. से 669 ई. पू. तक शासन किया। उसने बेबीलोन के प्रति प्रेम और सद्भाव की नीति अपनाई। उसने तीन वर्षों में बेबीलोन नगर को फिर से बसा दिया। मारदुक देवता की मूर्ति को बेबीलोन के मन्दिर में फिर से प्रतिष्ठित किया। एसरहाद्देन के बाद उसका पुत्र शमाश-शुम-उकिन बेबीलोन की गद्दी पर बैठा।

असुर-बनिपाल

एसरहाद्देन के बाद असुर बनिपाल असीरिया की गद्दी पर बैठा। वह असीरिया का अन्तिम महान शासक था। उसने साम्राज्यवादी नीति को अपनाया। 667 ई. पू. में एलम ने बेबीलोन पर आक्रमण किया। असुर बनिपाल ने एलम के शासक को पराजित किया। इस विजय के पश्चात् असुर बनिपाल ने अपने एक प्रतिनिधि को एलम का राजा बनाया। 625 ई. पू. में असुर बनिपाल के भाई शमास-शुम-उकिन ने एलन और फीनिशयन नगरों के शासकों की सहायता से असीरिया के राजा के विरुद्ध बेबीलोनिया में विद्रोह किया। असुर बनिपाल ने इस विद्रोह को कुचल दिया। इसमें शमाश-शुम-उकिन मारा गया। असुर बनिपाल ने अब कंदालानु नामक व्यक्ति को बेबीलोन की गद्दी पर बैठाया। उसने एलम को वीरान कर दिया। यहाँ तक कि मुर्दों को भी घसीटकर असीरिया ले जाया गया।

असुर बनिपाल अपने जीवन के अन्त तक असीरिया और बेबीलोन पर शासन करता रहा। उसके शासनकाल के उत्तरार्द्ध में सीथियन, मीडीज और परशियन के आक्रमण हुए, जिससे असीरिया की सैनिक शक्ति क्षति हो गयी और उसका पतन प्रारम्भ हुआ। इसी समय बेबीलोनिया के नबोपोलासर नामक व्यक्ति ने एक नये राजवंश की स्थापना की, जिसे ग्यारहवाँ राजवंश भी कहते हैं। लेकिन बेबीलोन के इतिहास में यह नये राजवंश के नाम से प्रसिद्ध है।

बेबीलोनिया का नया राजवंश
(625 ई. पू. से 639 ई. पू. तक)

असीरिया की कठिनाइयों से लाभ उठाकर बेबीलोनिया के नेता नबोपोलासर ने बेबीलोनिया में एक नये राजवंश की स्थापना की। इस वंश को प्राचीन बेबीलोनिया के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। नेबोपोलासर के समय में बेबीलोन का सर्वांगीण विकास हुआ। उसने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया। नेबोपोलासर ने मिस्री प्रभाव को रोकने का निश्चय किया। उसने अपने लड़के नेबुचडरेज्जर की अध्यक्षता में एक सेना भेजी। मिस्र और बेबीलोनिया की सेना में 604 ई. पू. कारकेमिश नामक स्थान पर युद्ध हुआ, जिसमें मिस्री सेना की पराजय हुई और उसे भागना पड़ा। शीघ्र ही सीरिया और पेलेस्टाइन के बहुत बड़े भाग पर बेबीलोन का अधिकार हो गया। नबोपोलासर एक बहुत बड़ा निर्माता भी था।

नबोपोलासर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र नेबुचडरेज्जर बेबीलोन की गद्दी पर बैठा। उसने साम्राज्यवादी नीति पर चलते हुए यरुशलम और फिनीशिया पर अधिकार कर लिया। उसने अपने शासन के 37वें वर्ष में मिस्र के राजा आमासिस को पराजित किया और मिस्र को अपने साम्राज्य का एक प्रान्त बना दिया।

नेबुचडरेज्जर एक महान निर्माता भी था। उसने बारसिप्पा नगर में एजिदा नाम के प्रधान मन्दिर का निर्माण करवाया और अपने पिता के राजमहल के छज्जे और चबूतरे को शहर से इतना ऊँचा बनवाया, जो आज 'हैंगिग गार्डन' के नाम से विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। उसने बेबीलोनिया में एसागिला नाम के मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया और राजमहल तथा निनमार मन्दिर के बीच ईश्तर देवी के नाम से एक बहुत बड़ा फाटक बनवाया, जिसका नाम 'ईश्तर फाटक' रखा। नेबुचडरेज्जर के समय में व्यापार-वाणिज्य का असाधारण विकास हुआ। उसने टेरेडन नाम का एक नगर भी बसाया था। इस प्रकार नेबुचडरेज्जर ने बेबीलोनियानी सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि में भी काफी दिलचस्पी ली थी।

अमेल मारदुक

नेबुचडरेज्जर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बेबीलोनिया की गद्दी पर बैठा। वह एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। अतः तीन वर्ष में ही पुरोहित वर्ग ने उसकी हत्या कर दी। इसके बाद नेबुचडरेज्जर का बहनोई नेरिगलिस्सर गद्दी पर बैठा। यह बेबीलोनिया का प्रसिद्ध सेनापति था, जिसका नाम नरगल-शर-अतसर था। उसने सेना का पुनर्गठन किया, परन्तु चार वर्ष बाद ही उसकी मत्यु हो गई। इसके बाद उसका पुत्र मारदुक गद्दी पर बैठा, जिसे नौ महीने बाद बबीलोनिया के पुरोहित वर्ग ने गद्दी से हटा दिया।

मारदुक के बाद नेबोनिडास को पुरोहित वर्ग ने गद्दी पर बिठाया। उसका जन्म पुरोहित वर्ग में हुआ था। अतः उसकी इतिहास और पुरातत्त्व में काफ़ी रुचि थी। इसके समय में फारस के राजा साइरस ने बेबीलोनिया पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। इस प्रकार बेबीलोनिया का प्रदेश फारसी साम्राज्य का एक अंग बन गया।